भारत–अमेरिका सामरिक सम्बन्ध

*डॉ. ममता शर्मा

सारांश

भारत–अमेरिका के बीच सामरिक साझेदारी मौजूदा भू–राजनीतिक स्थिति, साझा मूल्यों, अर्थव्यवस्था, उर्जा, मानव संसाधन विकास और पर्यावरण के क्षेत्रों में सहयोग के सन्दर्भ में परिभाषित की जा सकती है। सामरिक साझेदारी को दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के रूप मे देखा जाना चाहिए, यह साझेदारी आपसी विश्वास और सम्मान पर, एक–दूसरे की सम्प्रभुता, क्षेत्रीय सम्बन्धों और साझा मूल्यों पर आधारित है।

मुख्य शब्दः भारत, अमेरिका, सामरिक, सम्बन्ध, मुद्दे, सहयोग।

प्रस्तावना

भारत–अमेरिका के बीच आपसी असन्देह और अविश्वास के चार दशक बाद सम्बन्धों में परिवर्तन क्लिंटन की भारत यात्रा के समय हुआ। अमेरिका में हुई 9/11 आतंकवादी घटना के बाद दोनों देशों के बीच सामरिक साझेदारी में और वृद्धि हुई।

जनवरी 2004 में 'सामरिक सहयोग के लिए अगला कदम' के दौरान प्रधानमंत्री वाजपेयी व बुश द्वारा जारी बयान में घोषणा की गई कि भारत व अमेरिका सामरिक भागीदारी में असैनिक नागरिक परमाणु समझौता व अन्तरिक्ष सहयोग में वृद्धि व मिसाइल रक्षा पर वार्ता के विस्तार के रूप में प्रौद्योगिकी सहयोग शामिल है। फाइनेंशियल टाइम्स की रिपोर्ट का सुझाव है कि भारतीय व अमेरिकी रक्षा प्रतिष्ठानों के बीच तकनीकी स्तर पर बात हो, बैलिस्टिक मिसाइल रक्षा के क्षेत्र में सहयोग की सम्भावनाओ का पता लगाए। इस दिशा में जनवरी 2004 में एन.एस. एस.पी के रूप पहला कदम था।

फ्रेमवर्क रक्षा समझौता

जुलाई 2005 को प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह की अमेरिका यात्रा के दौरान 'रक्षा सहयोग पर न्यू फ्रेमवर्क' पर हस्माक्षर के बाद सामरिक सहयोग में और वृद्धि हुई। इस फ्रेमवर्क के द्वारा, रक्षा सेना अभ्यास में वृद्धि हुई। भारत को अपने सैन्य और मातृभूमि सुरक्षा क्षमताओं का विस्तार डॉलर के अधिग्रहण में खर्च करने की अगले 5 साल में कम से कम 30 अरब की उम्मीद जताई।

सन् 1995 से 2005 के बीच अमेरिका तथा भारत की सेनाओ के बीच जो संयुक्त सैन्य अभ्यास चले उनमें भारत की सामरिक एवं टेक्नीकल सुरक्षा सामर्थ्य को लेकर अमेरिकी सैन्य विशेषज्ञ विशेष रूप से प्रभावित हुए है। इससे अमेरिका को विश्वास हो गया कि भारत के साथ रक्षा समझौता उनके लिए घाटे का सौदा नहीं रहेगा उसी समय अमेरिका 'कॉर्नेजी एण्डाउमेन्ट इण्टरनेशनल पीस' के रक्षा एवं नाभिकीय विशेषज्ञ की रिपोर्ट में कहा गया कि–

''अमेरिका को तेजी से बढती चीन की शक्ति के विरोध मे भारत को एक अवरोध के रूप में प्रयोग करना चाहिए। ताकि हिन्द महासागर में चीन के बढते हस्तक्षेप को रोका जा सके'' दूसरी तरफ भारत के रक्षा मंत्री प्रणव मुखर्जी ने

कहा कि ''भारत को अपने पड़ौसियों से भारी खतरा है। सुरक्षा वातावरण लगातार संकटमय होता जा रहा है।''

यह समझौता सामरिक साझेदारी को मजबूत करने की दिशा मे महत्वपूर्ण कदम है। सुरक्षा एवं स्थायित्व को बनाए रखने,आतंकवाद एवं हिंसात्मक धार्मिक कट्टरवाद को परास्त करने, जनसंहार के हथियारों को रोकने जैसे मामलों पर तेरह बिंदुओं पर वचनबद्धता सुनिश्चित की गई।

फ्रेमवर्क रक्षा समझौते के अधीन वचनबद्धताओं के बिन्दु

- सम्मिलित एवं संयुक्त अभ्यास तथा जानकारियों का आदान–प्रदान।
- सामूहिक हित के बहुराष्ट्रीय ऑपरेशनों में सहयोग करना।
- सुरक्षा प्रोन्नयन तथा आतंकवाद को परास्त करने के लिए हमारी सेनाओं की क्षमताओं को सुदृढ़ करना।
- अन्य देशों के साथ अन्तः क्रिया का प्रसार इस प्रकार करना कि इससे क्षेत्रीय एवं वैश्विक शान्ति तथा स्थायित्व बढता हो।
- जनसंहार के हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए क्षमताओं को बढाना।
- दोतरफा रक्षा व्यापार में वृद्धि को रक्षा सौदों को एक साध्य न मानकर इसे सुरक्षा सुदृढ़ीकरण, सामरिक सहभागिता बढाने रक्षा संस्थाओ के बीच अधिक अन्तः क्रिया को प्राप्त करने तथा सेस्थाओं के बीच अधिक समझबूझ का निर्माण करने के साधन के रूप में देखना।
- रक्षा व्यापार एवं प्रोद्यौगिकीय सुरक्षा बचाव के फ्रेमवर्क के सन्दर्भ में प्रोद्यौगिकीय हस्तान्तरण सहयोग, सह–उत्पादन तथा अनुसंधान एवं विकास को बढाना।
- प्रक्षेशास्त्र रक्षा से सम्बन्धित सहयोग को बढाना।
- सम्मिलित ऑपरेशनों सहित घातक परिस्थितियों में तेजी से कार्य करने के लिए हमारी सेनाओं की क्षमताओं को बढ़ाना।
- शांति ऑपरेशनों के सफल संचालन के लिए अन्य देशों की सेनाओं को इस प्रकार के ऑपरेशनों में सहयोग देने लायक बनानें के लिए उनके प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान देना।
- रक्षा रणनीति तथा रक्षा बदलाव हेतु आदान–प्रदान करना।
- अधिसूचना के आदान–प्रदान बढाना।
- अमेरिका के रक्षा विभाग तथा भारत के रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ नेतृत्व द्वारा सामरिक स्तरीय विचार–विमर्श जारी रखना,जिसमें दोनो पक्ष सामूहिक हितों के अर्न्राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों पर विचारों का आदान–प्रदान कर सके ताकि पारस्परिक समझबूझ के साथ वांछित उद्देश्यों को सामूहिक एप्रोच से प्राप्त किया जा सके।

नई भू–राजनीतिक स्थितियाँ

भारत अमेरिका सामरिक सम्बन्धों को एशिया की सामरिक स्थिति भी प्रभावित करती है। आतंकवाद के खिलाफ भारत–अमेरिका का साथ–साथ होना चीन का अमेरिका को टक्कर देना, भारत, अमेरिका की बढती नजदीकियों के खिलाफ चीन का पाकिस्तान के साथ दोस्ती करना तथा पाकिस्तान को भारत के खिलाफ मदद देना, भारत का वैश्विक शक्ति के रूप में उभरना,अफगानिस्तान में अमेरिका को पाकिस्तान के सहायता की जरूरत होना इसके लिए

अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को आर्थिक मदद देना, उस आर्थिक मदद को पाकिस्तान द्वारा भारत में आतंकवादी गतिविधियों में प्रयोग करना, ये कारण वर्तमान में भारत–अमेरिका सामरिक सम्बन्धों को प्रभावित कर रहे है।

सुरक्षा वातावरण में नया सहयोग

शीतयुद्ध के बाद, वैश्विक व क्षेत्रीय सामरिक वातावरण में, सुरक्षा की प्रकृति व सैनिक शक्ति के प्रयोग में अनेक परिवर्तन हुए। पहला, विज्ञान व मकनीकी में तेजी से विकास, सूचना प्रौद्योगिकी के कारण परिवर्तन। दूसरा, उदारीकरण, बहुपक्षवाद और क्षेत्रवाद, द्विपक्षीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध संप्रभुता की बदलती प्रकृति, तीसरा, सुरक्षा के विस्तार, शान्ति पर बल, विकास और सहयोगात्मक सुरक्षात्मक चुनौतियाँ। इसमें न केवल परम्परागत रक्षा सम्बन्धित बातें शामिल है बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, अर्थिक, तकनीकी और पर्यावरणीय आयाम शामिल है।

भारत–अमेरिका रक्षा व्यापार

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की नवम्बर 2010 की भारत यात्रा दोनों देशों के बीच रक्षा रिश्तों के एक नए युग की शुरूआत है। इस यात्रा के दौरान अमेरिका ने परमाणु तथा रक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी आयात की पुरानी अड़चन को दूर करके भारतीय कम्पनियों पर लगी पाबंदी हटा ली है। इससे पहले परमाणु प्रतिबंधो की वजह से उद्योगपतियों ने अमेरिका की विश्वसनीयता के बारें में सवाल उठाये थे। असैन्य परमाणु करार ने इस सन्देह को दूर कर दिया।

भारत का सैन्य बाजार विश्व में तेजी से बढ रहा है। भारत लम्बे समय से हथियारों की आपूर्ति के लिए रूस पर निर्भर रहा है। अभी तक 86 प्रतिशत सैन्य उपकरण रूसी मूल के थे। लेकिन अब भारतीय सैन्यकर्मी रूसी उपकरणों की गुणवत्ता व विश्वसनीयता के बारे मे शिकायत करते है। अब भारत रक्षा व्यापार के लिए अमेरिका की तरफ बढ रहा है। अमेरिका सबसे बड़ा रक्षा बाजार है। इस व्यापार की शुरूआत सन 2005 के ''रक्षा फ्रेमवर्क समझौते'' पर हस्ताक्षर के बाद से हुई। उस दौरान भारत–अमेरिका ने कई रक्षा सौदे किये।

भारत–अमेरिका के बीच किये गये महत्वपूर्ण रक्षा सौदे

सन 2005 से वर्तमान तक भारत–अमेरिका के बीच महत्वपूर्ण रक्षा सौदे सम्पन्न हुए वो इस प्रकार हैं:–

क्र. सं.	नाम	राशि	वर्ष
1	12 काउन्टर बैटरी राडार सेट्स	190 मिलियन डॉलर	2006
2	यू एस एस ट्रेटन जहाज (भारतीयनाम आईएनएस जलश्व)	44 मिलियन डॉलर	2007
3	10 सी 17 ग्लोब मास्टर–3 परिवहन विभाग 10 – टोही विमान	3 अरब डॉलर	2008
4	एफ–18 सुपर हार्नेट व एफ–16	10 अरब डॉलर	2007
5	हरक्यूलिस परिवहन विमान फ्लाइट कावैट एयरक्राफ्ट के लिए एफ–414 इंजन	1 बिलियन डॉलर	2008
6	6 सी 130 जे सुपर हरक्यूलिस सैन्य परिवहन विमान	1 अरब डॉलर	2008
7	8 बोइंग सी0ओ0पी0 8 आई0ए0टी0	2.10 अरब डॉलर	2009
8	सब मरीन लड़ाकू विमान		2009
9	चर 8 आई विमान चार लैंडिग पैटून गोदी	5 अरब डॉलर	2009
10	एच–47 चिनकू हैलीकॉप्टर एमएच 60 आर हैलीकॉप्टर 155 एमएम की एम 117 अल्ट्रालाइट हेवित्जर तोप	70 लाख डॉलर	2010
11	99 ईजन एफ–144 गैस ईजन	65 करोड़ डॉलर	2010
12.	145 एम–777 हल्के होवित्जर तोप	5000 करोड़ रू.	2016

निष्कर्ष

एशिया में दो महाशक्तियों का उदय हो रहा है, एक चीन और दूसरा भारत। चीन की शक्ति को संतुलन करने के लिए अमेरिका को भारत के साथ रहना ही पड़ेगा।

अमेरिका को यह चिन्ता है कि चीन कभी विश्व भर में सबसे आगे नहीं निकल जाये। एशिया में शान्ति संतुलन को बनाये रखने के लिये भारत का शान्तिशाली होना बेहद जरूरी है। चीन को नियन्त्रित करने के लिये अमेरिका ने भारत,जापान और आस्ट्रेलिया के साथ मिलकर एक रक्षा समझौता किया। इसके तहत चारों देशो की सेनाओ ने कई बार मिलकर युद्धाभ्यास किया है।

*व्याख्याता
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़ (राज.)

सन्दर्भ सूची

1. ए.सी. गिरी – 'भारत–अमेरिका सम्बन्ध, 1947–76, नई दिल्ली, पृ.–38.
2. शिवाजी गांगुली, यू.एस. मिलिटरी एसिम्टेन्स टु इण्डिया – ए स्टडी ऑफ डिसीजन मेकिंग– इण्डिया क्वाटरली जि.XXXVIII, सं.3, नई दिल्ली, जुलाई–सितम्बर, 1992, पृ.–219.
3. सिंह, कुश मूव टू एक्पेन्ड, यू.एस इण्डिया डिफेन्सटीज, 29 सितम्बर 2004, http://palk.obserbars.net/2004/69
4. सिविल सर्विसेज क्रानिकल, नोएडा, जून 2010, पृ. 40
5. प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, जुन 2009, पृ. 1922
6. प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, जनवरी 2010, पृ. 1176
7. प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, जनवरी 2011
8. www.idsa in/idsa.stratgic.comments.contour.soft/the india